IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 4, October-December, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

1906–07 का दरभंगा अकाल–एक त्रासदी और उसकी विवेचना

लक्की कुमारी
शोधार्थी, इतिहास विभाग,
बी.आर.ए.बी.यू. मुजफ्फरपुर।
डॉ॰ वन्दना सिहं, शोध निर्देशिका
सहायक प्रध्यापक, जमुनीलाल महाविद्यालय, हाजीपुर
बी.आर.ए.बी.यू. मुजफ्फरपुर।

सारांश
1906 – 07 का दरभंगा अकाल बिहार के दरभंगा जिलें में ब्रिटिश शासन के दौरान उत्पन्न एक प्राकृतिक तथा मानवीय संकट था। यह अकाल केवल प्राकृतिक आपदा नहीं था बल्कि सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक कारणों का परिणाम था। उस समय जिलें में वर्षा असामान्य और अनियमित हुईं जिससे मुख्य फसलें – विशेषकर धान और गेहूँ विफल हो गईं। बाढ़ और सूखे की अनियमितता ने कृषि उत्पादन को गंभीर रुप से प्रभावित किया जिससे अन्न की भारी कमी हुई और स्थानीय ग्रामीण समुदायों में व्यापक भूखमरी फैल गई।

ब्रिटिश शासन द्वारा लगाए गए उच्च कर और अनुकूल राहत नीतियों के अभाव ने अकाल की गंभीरता को बढ़ाया तथा सामान्य जनजीवन को प्रभावित किया जिससे भूमिहीन मजदूर और छोटे किसान सबसे अधिक प्रभावित हुए जिन्हें जीविकोपार्जन के साधन न मिल पाने के कारण पलायन करना पड़ा। अनेक स्थानों पर भूख, बीमारी, और कुपोषण के कारण मृत्यु – दर बढ़ गया। कुछ इतिहासकारों जैसे – बी. एम. भाटिया, ए. लवडे, आदि के लेखन में 1906 – 07 के दरभंगा अकाल का वर्णन मिलता है। इतिहासकारों ने इस अकाल की विवेचना करते हुए यह स्पष्ट किया है कि यह केवल प्राकृत आपदा नहीं थी बल्कि औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों और स्थानीय जमींदारी व्यवस्था की कठोरता का भी परिणाम था। सरकारी राहत कार्य सीमित और विलंबित थे जिसने इस अकाल को और भयावह बना दिया।
मुख्य कुंजी :– 1906 – 07 का दरभंगा अकाल, औपनिवेशिक नीतियाँ, जमींदारी व्यवस्था, खाद्यान्न संकट, पलायन और मुत्यु – दर, सामाजिक – आर्थिक प्रभाव, राहत कार्य की विफलता आदि।

परिचय :

भारत के औपनिवेशिक इतिहास में अकालों का एक विशेष स्थान रहा है। 19वीं और 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में भारत सहित सम्पूर्ण बिहार कई बार भयंकर अकालों की चपेट में आया। इन्हीं में से एक था 1906 – 07 का दरभंगा अकाल जिसने बिहार के सामाजिक, आर्थिक और मानवीय जीवन को गहराई से प्रभावित किया। यह अकाल केवल प्राकृतिक आपदा नहीं बल्कि ब्रिटिश शासन की असंवेदनशील प्रशासनिक नीतियों, कृषि – आधारित अर्थव्यवस्था की कमजोरी और सामाजिक असामनता का दुष्परिणाम था।[1]

औपनिवेशिक काल में प्रायः अभाव को अकाल विनाशकारी स्थिति में पहुंचाने के लिए विदेशी शासन उत्तरदायी था। अकाल पर लिखने वाले लेखकों में के. सी. घोष, मालविका चक्रवर्ती, सब्यासाची भट्टाचार्य, बी. एम. भाटिया, श्रीधर पाण्डेय आदि इतिहासकारों का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। इन इतिहासकारों ने बंगाल प्रेसिडेंसी में जिसके अन्तर्गत बिहार भी आता था, में आए 1770, 1783, 1866, 1874, 1896 – 97, 1943 जैसे अकाल और उसकी भयावहता के लिए उत्तरदायी ब्रिटिश शासन की आर्थिक एवं प्रशासनिक नीतियों का वर्णन किया है यद्यपि सरकारी रिपोर्ट और दास्तावेज एक महत्वपूर्ण स्त्रोत के रुप में विभिन्न अकाल की परिस्थितियों की जानकारी देते है, परंतु इसमें प्रशासन की लापरवाही और नितियों की भूमिका को अनदेखी करतें है। 1906 – 07 का अकाल भी बिहार के दरभंगा जिला के कई भागों में आयी ऐसी ही आपदा थी जो प्राकृतिक से अधिक मानव निर्मित या प्रशासन प्रदत्त त्रासदी थी जिसने हजारों की संख्या में लोगों एवं पशुओं को प्रभावित किया। प्रस्तुत पत्र में 1906 – 07 के दरभंगा में आये अकाल, प्रभावित क्षेत्र, इसका प्रभाव और इसमें प्रशासन की जिम्मेदारी का आलोचनात्मक वर्णन, उपलब्ध प्राथमिक एवं गौण स्त्रोंतों के आधार पर करने का प्रयास किया गया है।

दरभंगा जिला उस समय तिरहुत कमिश्नरी के अन्तर्गत आता था। दरभंगा जिला के अन्तर्गत तीन उपखंड थे जिसमें सदर, मधुबनी और समस्तीपुर शामिल था।[2] दरभंगा जिला में अकाल की घोषणा होने से पहले ही वहाँ की स्थिति इतनी खराब थी कि वहाँ के लोगों की परेशानी को देखते हुए इस क्षेत्र में अकाल की घोषणा की गई जिससे आम नागरिकों को साहायता प्रदान किया जा सके। जहाँ – जहाँ गंभीर संकट मौजूद था उसे अकाल क्षेत्र घोषित किया गया। अकाल घोषित क्षेत्र में पुरा सदर अनुमंडल जिसमें दरभंगा, बहेरा और रोसड़ा थाना, समस्तीपुर अनुमंडल का वारिसनगर थाना एंव मधुबनी अनुमंडल का बेनीपट्टी थाना को शामिल

किया गया था।[3]

जिले के बाकी हिस्सा में समस्तीपुर के दलसिंह सराय और समस्तीपुर थाने को सुरक्षित मानते हुए बाढ़ के समय में ही कुछ अस्थाई राहत कार्य चलाकर राहत को रोक दिया गया क्योंकि बाकी सारे जगहों को सरकार द्वारा सुरक्षित माना गया। सरकार द्वारा मधुबनी अनुमंडल के तीन थाना मधुबनी, खजौली, फुलपरास में अकाल घोषित क्षेत्र के तरह संकट व्यापक नहीं था इसलिए राहत – कार्य को रोक दिया गया लेकिन चिन्ता प्रर्याप्त और गंभीर जरुर था। सरकार द्वारा परीक्षण – कार्य एंव निर्धनों के लिए आश्रय गृह खोलकर राहत का व्यवस्था किया गया लेकिन वर्णित थानों को सरकार द्वारा अकाल क्षेत्र घोषित करना उपयुक्त नहीं समझा गया। घोषित क्षेत्रों में जिले का दक्षिण तथा पूर्वी भाग जिसमें रोसड़ा एंव बहेरा थाना का हिस्सा हमेशा से खराब रहा था यद्यपि इस क्षेत्र में भी अकाल गंभीर था, फिर भी इसे सुरक्षित मान लिया गया।

दरभंगा जिला एक विशाल जलोढ़ मैदान था जिसकी सामान्य ढलान उत्तर से दक्षिण की ओर थी। इसका अकार समांतर चतुर्भुज के समान था जिसकी उत्तर – पूर्व से दक्षिण – पश्चिम तक अधिकतम लम्बाई 96 मील थी यह उत्तर में नेपाल, पूर्व में भागलपुर, पश्चिम में मुजफ्फरपुर, दक्षिण – पूर्व में मुंगेर तथा दक्षिण – पश्चिम में गंगा नदी से घिरा था जो इसे पटना जिला से अलग करती थी। यह जिला अपनी आंतरिक नदी प्रणाली के कारण मिट्टी और खेती दोनों की विशेषताओं में स्पष्ट रुप से भिन्न तीन भागों में बंटा हुआ था इनमें से पहला भाग बूढ़ी गंडक नदी के दक्षिण – पूर्व में स्थित थे जिसमें दलसिंह सराय और समस्तीपुर के थाने शामिल था। यह जिले का सबसे उपजाऊ और समृद्धि क्षेत्र थे और यहाँ भदई और रबी की बहुमूल्य फसलें उगाई जाती थी। इस क्षेत्र में फसलों की विविधता के कारण यहाँ अनाज की कभी कमी नहीं होती थी।

दूसरा क्षेत्र बागमती और गंडक नदियों के बीच एक छोटा सा दोआब था। यह क्षेत्र पूर्ववर्त्ती नदी से जलप्लावन के लिए उत्तरदायी थी तथा बाढ़ की तबाही से ग्रस्त थी। यहीं वर्तमान अकाल की उत्पति थी। यह जिले का सबसे निचला भाग था और यहाँ की मुख्य फसल शीतकालीन चावल थी।

जिले का बाकी हिस्सा जिसमें सम्पूर्ण सदर और मधुबनी अनुमंडल शामिल था यह एक विशाल निचला मैदान था जिसके किनारे अनगिनत अनेक नदियाँ और नाले थे जो बरसात के मौसम में बाढ़ का रुप ले लेती थी इस हिस्से में मुख्य फसल शीतकालीन चावल थी जो शुरुआती बाढ़ से नहीं डुबे होने पर बहुतयात में होता था। फुलपरास थानें रबी फसलों के लिए उपयुक्त थे। दरभंगा सदर अनुमंडल के दक्षिणी आधे हिस्से में (भदई फसलें) मकई और मरुआ ऊपजाई जाती थी।

दरभंगा जिला में तीन मुख्य नदियाँ रही हैं– गंगा, गंडक और कमला – तिलजुगा नदी। गंगा इस जिले की दक्षिण – पश्चिम सीमा को केवल 20 मील तक घेरती थी। बूढ़ी गंडक या छोटी गंडक जो पूसा के पास दरभंगा जिले में प्रवेश करती थी और समस्तीपुर से बहने के बाद रोसड़ा के ठीक नीचे से निकल जाती थी, यह एक मूल्यवान व्यापार राजमार्ग था जिसके किनारों पर कई बड़े बाजार और मार्ट थे। सदर और मधुबनी अनुमंडल की सभी नदियाँ कमला – तिलजुगा नदी से संबंधित थे क्योंकि वे रोसड़ा थाने के दक्षिण – पूर्व कोने में तिलकेश्वर में मिलती थी। इस समूह की सबसे महत्वपूर्ण नदियाँ थी – 1. बागमती जो नेपाल में निकलती थी और बूढ़ी गंडक के समानांतर पूर्व दिशा में बहती थी, 2. छोटी बागमती जिस पर दरभंगा शहर बसा है, 3. कमला जो पहाड़ियों से दक्षिण की ओर बहती थी 4. बलान जिसे भाटी बलान के नाम से भी जाना जाता था और 5. तिलजुगा जो नेपाल में निकलती थी और जिले की संपूर्ण पूर्वी सीमा को घेरती थी। ये सभी नदियाँ भारी बाढ़ के लिए उत्तरदायी थी लेकिन वर्ष के अधिकांश भाग के दौरान व्यवहारिक रुप से सूखी रहती थी।

1905 – 06 में दरभंगा जिला एक कृषि प्रधान जिला था जो पूर्ण रुप से वर्षा पर निर्भर थी।[4] कुल निवासियों का कम से कम 78.6 प्रतिशत कृषि से अपनी जीविका चालाते थे। दरभंगा में बिहार के बाकी हिस्सों के तरह तीन फसलें – भदई, अगहनी और रबी उगाई जाती थी। इनमे सबसे महत्वपूर्ण शीतकालीन चावल थी जो फसल वाले क्षेत्र के तीन से पाचवें हिस्से को कवर करता था।

विभिन्न प्रकार के फसलों की सापेक्षिक सीमा दर्शाई गई है[5]–

Serial number.	NAME OF THANA.	AREA.	RICE.						Wheat.		Barley.	
			Aghani.		Bhadai.		Total.					
			Area.	Percentage to net cropped area.	Area.	Percentage to net cropped area.	Area.	Percentage to net cropped area.	Area.	Percentage to net cropped area.	Area.	Percentage to net cropped area.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1	Benipati	172,772	94,891	69.43	8,443	6.18	103,334	75.61	4,383	3.21	14,516	10.62
2	Khajauli	206,525	99,343	59.49	16,887	10.11	116,230	69.60	3,942	2.36	12,102	7.25
3	Phulparas	291,060	178,525	76.37	18,294	5.69	191,819	82.06	3,721	1.59	13,866	5.93
4	Madhubani	190,343	90,836	62.25	8,455	5.79	99,291	68.04	3,500	2.40	15,538	10.65
	Subdivisional Total …	860,700	463,595	67.84	47,079	6.89	510,674	74.73	15,546	2.28	56,022	8.20
5	Darbhanga	271,827	125,884	59.05	12,513	5.87	138,397	64.92	7,439	3.49	24,021	11.27
6	Bahera	286,937	155,800	69.22	3,929	1.74	159,729	70.96	5,964	2.65	22,238	9.88
7	Rosera	222,063	101,417	57.75	3,572	2.04	104,989	59.99	6,572	3.74	12,858	7.32
	Subdivisional Total …	780,827	383,101	62.41	20,014	3.26	403,115	65.67	19,975	3.26	59,117	9.63
8	Warisnagar	125,336	36,604	34.89	1,136	1.08	37,740	35.97	5,409	5.15	11,960	11.40
9	Samastipur	189,481	56,372	35.70	384	0.24	56,756	35.94	6,328	4.01	15,283	9.68
10	Dalsingh Sarai	160,586	30,534	23.06	188	0.14	30,722	23.20	5,623	4.25	10,126	7.32
	Subdivisional Total …	475,403	123,510	31.25	1,708	0.43	125,218	31.68	17,360	4.39	37,369	9.46
	District Total	2,116,930	970,206	57.33	68,801	4.06	1,039,007	61.39	52,881	3.12	152,508	9.01

संदर्भ – फाइनल रिपोर्ट ऑन द फेमिन रिलीफ ऑपरेशन इन द डिस्ट्रिक्ट ऑफ दरभंगा डयूरिंग 1906 – 07.[5]
इस तालिका के अध्ययन से यह पाता चलता है कि दरभंगा जिला में चावल की फसले बहुत महत्वपूर्ण थी जिसकी विफलता से वहाँ के लाखों लोगों के जीवन काल – कवलित हो गई।

उदेश्य :

1906–07 में दरभंगा में पड़े अकाल के कारणों का विश्लेषण, जनसांख्यिक और सामाजिक प्रभाव का मूल्यांकन, अकाल के आर्थिक प्रभाव का अध्ययन तथा प्रशासनिक और राहत नीतियों का मूल्यांकन करना आदि।

अकाल के कारण :

1906 – 07 का अकाल सूखा एंव बाढ़ के कारण फसलों की विफलता का परिणाम थी।[6] 1906 में भीषण बाढ़ आया तथा सितंबर और अक्टूबर में सूखा पड़ा। अगस्त 1906 की बाढ़ इतनी प्रचंड थी कि उसने बूरी तरह से प्रभावित क्षेत्रों के हजारों लोगो को तुरंत भुखमरी के कगार पर ला खड़ा किया। जुलाई 1906 के मध्य तक नदियों का जल स्तर बढ़ गया और किनारे बाढ़ के पानी से भर गए जिससे भदई फसलों को काफी नुकसान पहुँचा और धान की पौधे नष्ट हो गई। यह पहली बाढ़ पूरी तरह समाप्त भी नहीं हुई थी कि अगस्त में एक और भीषण जलप्लावन आया तथा पुरा जिला जलमग्न हो गया सिवाय कुछ गांवों और भूभागों को छोड़कर जो ऊंचे इलाकों में स्थित थे या तटबंधों द्वारा संरक्षित थे। केवल लहेरिया सराय में कचहरी परिसर और दरभंगा में बड़ा बाजार ही बच पाएं जो बहुत ऊँचाई पर स्थित था। सभी दिशाओं में सड़के टूट गई, कई स्थानों पर रेलवें लाइनें टूट गई और गया घाट तथा किशुनपुर रेलवे स्टेशन के पास बड़े पुल बह गए परिणामस्वरुप एक महीने से अधिक समय तक रेलवे यातायात ठप रहा और जिले में संचार असंभव हो गया। नाव भी बड़ी कठिनाई से उपलब्ध थी। बाढ़ एक पखवाड़े से अधिक समय तक अपने चरम पर रही जिसके बाद पानी धीरे – धीरे कम होने लगा लेकिन इसे पूरी तरह से गायब होने में दो महीने लग गए। फसलों पर

बाढ़ का प्रभाव काफी विनाशकारी था। लगभग पूरी की पूरी भदई फसल नष्ट हो गई जब वो पकने वाली थी। धान के पौधे भी बह गए जो गिर गए थे। चूँकि बाढ़ का पानी बहुत लंबे समय तक रहा इसलिए पुनः रोपाई असंभव हो गया लेकिन मधुबनी की शीतकालीन चावल की फसल बाद में सूखे और हथिया बारिश की विफलता से नष्ट हो गई।[7]

बाढ़ ने फसलों को नुकसान उस वर्ष पहुचाया जिस वर्ष फसल अच्छी नही हुई क्योंकि 1905 के पिछले वर्ष में रबी को छोड़कर सभी फसलों का उत्पादन बहुत खाराब हुआ था। 1905–06 में रबी का फसल सामान्य से 81 प्रतिशत हुई परन्तु 1906 की भदई फसल के साथ – साथ अगहनी फसल के नुकसान ने संकट को बढ़ा दिया और अकाल को जन्म दिया।

अकाल का एक अन्य कारण था खाद्यानों की ऊँची कीमतें। कीमतें जनवरी 1906 में बढ़नी शुरु हुई और जून तक अकाल की स्थिति ला दी जो सामान्य दरों से लगभग 40 प्रतिशत अधिक थी। बाढ़ आने और फसलों को हुए नुकसान और रेल यातायात में रुकावट के कारण वे 1896 – 97 के अकाल की तुलना में बहुत अधिक स्तर पर पहुँच गईं। एक समय चावल की कीमत 5 सेर प्रति रुपया तक पहुँच थी और उसे प्राप्त करना मुश्किल था।

सबसे अधिक प्रभावित वर्ग भूमिहीन कृषि मजदूर और छोटे किसान थे। किसी अकाल में चाहे वो बड़ा हो या छोटा कृषि मजदूर सबसे अधिक पीड़ित होते हैं क्योंकि वे बिना रोजगार के रह जाते थे तथा उनके पास अपना भरण– पोषण करने का कोई अन्य साधन नहीं होता था। भदई फसलों के पूर्ण विनाश के बाद आने वाले संकट के दिनों में उनकी स्थिति सबसे खराब थी और उन्हें अचानक रोजगार से निकाल दिया गया और भविष्य में उन्हें कोई काम मीलने की संभावना नहीं थी।[8]

अकाल का प्रभाव :

1906–07 के दरभंगा अकाल में केवल प्राकृतिक आपदाओं का ही योगदान नहीं था बल्कि ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों ने इसके प्रभाव को और गभींर बना दिया। ब्रिटिश प्रशासन ने किसानों पर भारी भूमि कर और टैक्स लागू किया था और अकाल के दौरान भी कर वसूल करना जारी रखा गया जिसने किसानों की स्थिति को और दयनीय बना दिया था।[9]

1901 की अंतिम जनगणना के अनुसार यह जिला 3,548 वर्ग के क्षेत्र में फैला है और इसकी जनसंख्या 2,012,611 थी। अकाल घोषित क्षेत्र जिसमें जिले के 10 में सें 5 थाने अर्थात सदर, बहेरा, रोसड़ा, वारिसनगर और बेनीपट्टी शामिल था जो 1,690 वर्ग मील में फैला था इसकी जनसंख्या 1,479,571 इसलिए क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों की दृष्टि से घोषित क्षेत्र पूरे जिले के लगभग आधे हिस्से में फैला हुआ था।

Name of Thana.	Area in square miles.	Population.	Density per square mile.
Sadar … …	428	435,453	1,017
Bahera … …	448	355,024	794
Rosera … …	348	275,118	793
Benipati … …	270	244,867	907
Warisnager … …	196	169,055	867
Total of declared area …	1,690	1,479,517	875

संलग्न तालिका में अकाल घोषित क्षेत्र के क्षेत्रफल और जनसंख्या थानावार दर्शाई गई है[10]:–

संदर्भ – फाइनल रिपोर्ट ऑन द फेमिन रिलीफ ऑपरेशन इन द डिस्ट्रिक्ट ऑफ दरभंगा डयूरिंग 1906 – 07[10]

अकाल के कारण इन थानों की हजारों लोग भूख, कुपोषण और बीमारियों जैसे हैजा, टाइफाइड और डायरिया से मृत्यु के शिकार हुए। 1906 – 07 के दरभंगा अकाल ने प्रवासन को बढ़ावा दिया। 1905 में प्लेग से कम – से – कम 1.17 लाख मौते हुई लगभग हर साल हैजा की महामारी फैलती थी, हैजा से होनेवाली औसत वार्षिक मृत्यु दर 71,000 से कम नहीं थी। भोजन और रोजगार के तलाश में अगहनी और रबी की फसल के समय अपने गाँव छोड़कर बंगाल, असम और नेपाल की ओर गए। हालाँकि वे अपनी महिलाओं को बिना किसी व्यवस्था के पीछे छोड़ गए इसलिए हमारे राहत कार्यों में महिला मजदूरों की संख्या बहुत ज्यादा थी। शायद ऐसा लगता है कि ये सभी मजदूर बाद में वापस आ गए। इससे ग्रामीण जनसंख्या में अस्थाई कमी और स्थानीय संसाधनों पर दबाव बढ़ा।[11]

अकाल के कारण इन थानों की हजारों लोग भूख, कुपोषण और बीमारियों जैसे हैजा, टाइफाइड और डायरिया से मृत्यु के शिकार हुए। पशुओं की स्थिति सामान्यतः अच्छी नहीं थी। और चारें की कमी के कारण पशु की मृत्यु की सूचना बहेरा थाने में थोड़े समय के लिए मिलती है। कोई अप्रवासन नही हुआ। आस – पास के जिलों में परिस्थितियाँ ज्यादा अनुकूल होने के कारण, इस

जिलें में किसी भी अप्रवासन का जिक्र नहीं है रोसड़ा में राहत कार्य के लिए मुंगेर जिले से कुछ ग्रामीण आए थे।

राहत कार्य :

प्रारंभिक राहत उपाय बाढ़ से देश में आई अचानक तबाही से उत्पन्न भुखमरी को रोकने तक ही सीमित थे। चूँकि देश चारों ओर से जलमग्न था, इसलिए राहत कार्य आयोजित करना आवश्यक था। आम तौर पर राहत केवल रसोई में पके हुए दानों के रुप में ही दी जा सकती थी। इंडिगों फैक्टिरियों के प्रबंधकों ने इस स्तर पर बहुत सहायता प्रदान की और अधिकांश फैक्टिरियों प्रभावित क्षेत्र में राहत प्रदान करन में सक्षम थे। पुलिस, अरबकारी और शिक्षा अधिकारियों के माध्यम से भी अनाज को दान के रुप में कुछ राहत के लिए दी गई। जब लहेरिया सराय और दरभंगा शहर बागमती नदी में डूब गए, तो बेघर निर्धनों और बेसहारा लोगों को राहत देने के लिए तुरंत एक निजी चंदा इकठा कर उनके लिए एक आश्रय स्थल बनाया गया और कसाईखाना परिसर में एक अस्थाई रसोइघर खोला गया था (लहेरिया सराय में एकमात्र जगह जो पानी में नहीं डूबी थी) गरीबों को पका हुआ भोजन बाँटा गया कुछ दिनों बाद जब शहर से बाढ़ कम हो गई तो यह बंद कर दिया गया और दरभंगा में हराही धर्मशाला में एक नियमित गरीबों का आश्रय गृह खोला गया। जिले के आतंरिक भाग के संबंध में आबकारी उप – जिलाधीश और उनके कर्मचारियों, पुलिस और शिक्षा अधिकारियों से युक्त सरकारी राहत दलों को जलमग्न गाँवों में भूखे लोगों को मदद देने के लिए अनाज और नकदी की आपूर्ति के साथ नावों में भेजा गया था। कई यूरोपीय करखानों के प्रबंधकों को अग्रीम धनराशी दी गई और उन्हें तत्काल अभावग्रस्त मामले में (अस्थाई दान के माध्यम से) राहत देने के लिए कहा गया ताकि वहाँ की जनता अकाल से तुरंत निपट सके।

हालाँकि दुःख और पीड़ा बहुत ज्यादा थी फिर भी इन उपायों से कई लोंगों की जान बचाई गई इससे यह तो नहीं कहा जा सकता की कोई मृत्यु दर नहीं हुई होगी क्योंकि जबतक गाँव जलमग्न रहे और बाहरी संपर्क से कटे रहे तब तक नमी, खुले में शौच और भोजन में कमी के कारण मौतें हुई होगी। लेकिन बाढ़ का पानी कम होते ही रसोईघरों मे उमड़ने वाले दुर्बल लोगों को देखते हुए यह प्रतीत होता है कि इस स्तर पर मृत्यु दर ज्यादा नहीं रही होगी।

सितंबर 1906 के पहले सप्ताह तक, 20 रसोईघर खोली गई। सदर थाने में 9, बहेरा थाने मे 2, रोसड़ा थाने में 1 और समस्तीपुर अनुमंडल मे 8। अक्टूबर की शुरुआत तक रसोईयों की संख्या 59 हो गई जिनमें से अधिकांश सदर अनुमंडल में थी, जो कि सबसे ज्यदा प्रभावित थे। जिस समय अकाल समाप्त हुआ उस समय केवल 42 रसोईया और निर्धन गृह खुले थे जिनमें प्रतिदिन औसतन 23,438 लोग आते थे, जबकि सितंबर के अंतिम सप्ताह में 59 रसोईया और निर्धन गृह खुले थे जिनमें प्रतिदिन औसतन 44,456 लोग आते थे।

16 सितंबर 1906 को कार्यवाहक लेफिनेंट गवर्नर मानवीय श्री एफ ए स्लैक ने मुजफ्फरपुर में स्थानीय अधिकारियों और गैर सरकारी लोगों का एक सम्मेलन आयोजित किया जिसमें दरभंगा से संबंधित पूरी स्थिति पर चर्चा की गई और सरकार द्वारा कुछ आदेश जारी किए गए। यह निर्णय लिया गया कि 14 परीक्षण – कार्य खोले जाने चाहिए, और परिणाम को ध्यान से देखा जाना चाहिए और इस बीच रसोईघरों द्वारा राहत की मौजूदा व्यवस्था जारी रखी जानी चाहिए। तदनुसार कार्यवाहक जिला इंजीनियर श्री ए ग्रीनवे की देखरेख में सभी 14 परिक्षण – कार्य खोले गए। परिक्षण – कार्यों की संख्या में लगातार वृध्दि हुई। सितबंर के अंत में औसत दैनिक उपस्थिति केवल 1,210 थी, नवंबर के अंत में यह संख्या बढ़कर 56,880 हो गई जो रोसड़ा थाना में सबसे अधिक थी।

बंगाल के गवर्नर (सर एंडय फ्रेजर) ने 15 नवंबर 1906 को मुख्य सचिव श्री कार्लाईल और श्री मौड के साथ जिले के प्रभावित इलाकों का दौरा किया तब जाकर बहेरा, रोसरा, सदर, बेनीपट्टी और वारिसनगर के पांच थानों में अकाल की घोषणा की गई लेकिन इसे 1 दिसंबर 1906 से प्रभावी माना गया।

निष्कर्ष :

1906 – 07 का दरभंगा अकाल बिहार की इतिहास की एक गंभीर त्रासदी थी। इस अकाल ने न केवल दरभंगा जिले की अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित किया, बल्कि यहाँ के सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय ढ़ांचे को भी हिला कर रख दिया। वर्षा की कमी और व्रीव वर्षा, ब्रिटिश शासन की उपेक्षा और राहत– कार्यों में प्रशासनिक उदासीनता ने इस स्थिति को और भयावह बना दिया।

इस अकाल के परिणामस्वरुप हजारों लोग भुखमरी और बीमारियों से काल – कवलित हो गए। कृषि व्यवस्था चरमरा गई, पशुधन नष्ट हो गया और ग्रामीण जनसंख्या का बड़ा भाग पलायन के लिए मजबूर हुए तथा स्थानीय किसानों का जीवन कर्ज और गरीबी के जाल में फस गया। राजनीतिक दृष्टि से भी इस अकाल ने भारतीय जनता में ब्रिटिश शासन के प्रति असंतोष को गहरा किया।

दरभंगा अकाल केवल प्राकृतिक आपदा नहीं थी, बल्कि यह औपनिवेशिक शासन की नीतिगत विफलताओं का प्रतीक थी। इसने यह स्पष्ट कर दिया कि जब शासन जनता की बुनियादी आवश्यकताओं की अनदेखी करता है, तब प्राकृतिक संकट सामाजिक और मानवीय संकट बन जाता है।

संदर्भ सूची :

1. भाटिया, बी.एम. (1967). फेमिन् इन इंडिया : ए स्टडी इन सम ऐसपेक्टस ऑफ द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया (1860 – 1965). एशिया पब्लिशिंग हाउस, बॉम्बे.
2. बिहार राज्य अभिलेखागार, पटना, पृष्ठ 363.
3. गवर्नमेंट ऑफ बंगाल. (1908), फाइनल रिपोर्ट ऑन द फेमिन रिलीफ ऑपरेशन इन द डिस्ट्रिक्ट ऑफ दरभंगा डयूरिंग 1906 – 07 एण्ड द रिजोल्यूशन ऑफ गवर्नमेंट थेऑन, कलकत्ता : द बगांल सेक्रेटेरियट प्रेस, पृष्ठ 5. (बिहार राज्य अभिलेखागार पटना).
4. ओ मेली, एल. एस. एस : बंगाल डिसट्रिक्ट् गजेटियर्स दरभंगा, द बगांल सेक्रेटेरियट बुक डिपो, कलकत्ता, 1907.
5. गवर्नमेंट ऑफ बंगाल. (1908), फाइनल रिपोर्ट ऑन द फेमिन रिलीफ ऑपरेशन इन द डिस्ट्रिक्ट ऑफ दरभंगा डयूरिंग 1906 – 07 एण्ड द रिजोल्यूशन ऑफ गवर्नमेंट थेऑन, कलकत्ता : द बगांल सेक्रेटेरियट प्रेस, पृष्ठ 7. (बिहार राज्य अभिलेखागार पटना).
6. लवडे, ए. (1914). फॉर कंसल्टेशन औनली द हिस्ट्री एण्ड इकोनॉमिक ऑफ इंडियन फेमिन्स., जी. बेल एण्ड सन्स एलटीडी, लंदन., गवर्नमेंट ऑफ बंगाल. (1907), रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रशन ऑफ बंगाल, 1906 – 07, पृष्ठ 13. कलकत्ता : गवर्नमेंट प्रिंटिंग ऑफिस.https://ia601407.us.archive.org/0/items/in.ernet.dli.2015.511827/2015.511827.Report-On_text.pdf ओ मेली, एल. एस. एस : बंगाल डिसट्रिक्ट् गजेटियर्स दरभंगा, द बंगाल सेक्रेटेरियट बुक डिपो, कलकत्ता, 1907, पृष्ठ 77.
7. गवर्नमेंट ऑफ बगांल. (1908), फाइनल रिपोर्ट ऑन द फेमिन रिलीफ ऑपरेशन इन द डिस्ट्रिक्ट ऑफ दरभंगा डयूरिंग 1906 – 07 एण्ड द रिजोल्यूशन ऑफ गवर्नमेंट थेऑन, कलकत्ता : द बंगाल सेक्रेटेरियट प्रेस, पृष्ठ 8.
8. उपरोक्त, पृष्ठ 9.
9. गवर्नमेंट ऑफ बंगाल. (1907), रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रशन ऑफ बंगाल, 1906 – 07, , पृष्ठ 19. कलकत्ता : गवर्नमेंट प्रिंटिंग ऑफिस.https://ia601407.us.archive.org/0/items/in.ernet.dli.2015.511827/2015.511827.Report-On_text.pdf
10. गवर्नमेंट ऑफ बंगाल. (1908), फाइनल रिपोर्ट ऑन द फेमिन रिलीफ ऑपरेशन इन द डिस्ट्रिक्ट ऑफ दरभंगा डयूरिंग 1906 – 07 एण्ड द रिजोल्यूशन ऑफ गवर्नमेंट थेऑन, कलकत्ता : द बंगाल सेक्रेटेरियट प्रेस, पृष्ठ 10. (बिहार राज्य अभिलेखागार पटना).
11. गवर्नमेंट ऑफ बिहार (1956). सेन्सस ऑफ इंडिया, 1951.वॉल्यूम. v, बिहार पटना : द सुपरिटेंडेंट सेक्रटेरीअल प्रेस. पृष्ठ 14.
12. रिपोर्ट ऑन द फेमिन ऑफ 1906 – 07 इन बिहार एण्ड बगांल गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, 1908, पृष्ठ 12 – 15.
13. बेडेन – पावेल, बी. एच. (1907). द इंडियन विलेज कम्युनिटी, पृष्ठ 203 – 210बी.
14. मजूमदार, डी. एन. रुरल प्रोफाइल्स इन कोलोनियल इंडिया, 1931, पृष्ठ 89 – 93.
15. ड्रेज, जे. (1988). फेमिन प्रिवेंशन इन इंडिया : फाइनल रिपोर्ट ऑन द फेमिन रिलीफ ऑपरेशन इन द डिस्ट्रिक्ट ऑफ दरभंगा डयूरिंग 1906 – 07, पृष्ठ 10. https://www.wider.unu.edu/sites/default/files/WP45.pdf
16. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, रिपोर्ट ऑन द फेमिन ऑफ 1906 – 07 इन बंगाल एण्ड बिहार. कलकत्ता : गवर्नमेंट प्रेस, 1908.
17. रॉय, तीर्थंकर. (2011), द इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया, 1857 – 1947. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी.
18. कुमार, धर्मा (ई डी.), (1983). द कैम्ब्रिज इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया,, वॉल्यूम. 2, 1757 – 1970.
19. हंटर, डब्लू. डब्लू. एनल्स ऑफ रुरल बंगाल, 1908.बेडेन – पावेल, बी. एच. (1892). लैण्ड सिस्टम ऑफ ब्रिटिश इंडिया. लंदन : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ट 198 – 202.
20. गवर्नमेंट ऑफ बिहार (1956). सेन्सस ऑफ इंडिया, 1951. ,, वॉल्यूम. v, बिहार पटना : द सुपरिटेंडेंट सेक्रटेरीअल प्रेस.
21. गवर्नमेंट ऑफ बंगाल. दिसम्बर (1907), : फाइनल रिपोर्ट ऑफ फेमिन रिलीफ ऑपरेशन इन द डिस्ट्रिक्ट ऑफ दरभंगा डयूरिंग द ईयर 1906 – 07, रेवेन्यू डिपार्टमेंट. एग्रीकल्चर ब्रांच. एनओएस. 51 – 57, फाइल 1एफ/6 77 – 81. (बिहार राज्य अभिलेखागार पटना).
22. गवर्नमेंट ऑफ बंगाल. मार्च (1908), दरभंगा फेमिन रिपोर्ट फॉर जुलाई 1907. रेवेन्यू डिपार्टमेंट. एग्रीकल्चर ब्रांच. एनओएस.37 – 44, फाइल 1एफ/6 82 – 87 ऑफ 1907. (बिहार राज्य अभिलेखागार पटना)